9

अष्टाध्यायी के सूत्रों में उल्लिखित व्याकणाचार्य एवं उनके मत

डॉ अवधेश कुमार
सहायक आचार्य (संस्कृत), मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
Email- avdheshkumar@ignou.ac.in

सारांश - अष्टाध्यायी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पाणिनि से पूर्व भी वैय्याकरण थे जिनके व्याकरणों का अध्ययन कर पाणिनि ने एक समग्र व्याकरण का निर्माण क्या होगा। यह तथ्य इसलिए सत्य के नजदीक प्रतीत होता है क्योंकि स्वयं पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में 10 व्याकरण-आचार्यों का उल्लेख किया है।

अष्टाध्यायी के सूत्रों में स्मृत व्याकरण-आचार्य- 1. आपिशलि 2. काश्यप 3. गार्ग्य 4. गालव 5. चाक्रवर्मण 6. भारद्वाज 7. शाकटायन 8. शाकल्य 9. सेनक 10. स्फोटायन । इन आचार्यों के मतों का पाणिनि ने विस्तार से सूत्रों में उल्लेख किया है जो इस शोध पत्र का विषय है ।

कूटशब्द -आपिशलि, काश्यप, गार्ग्य,गालव,चाक्रवर्मण,भारद्वाज,शाकटायन,शाकल्य सेनक स्फोटायन ।

प्रस्तावना- संसार के सर्वश्रेष्ठ वैय्याकरण पाणिनि हैं। यह केवल भारतीय ही नहीं मानते अपितु पाश्चात्य विद्वान भी मानते हैं। पाणिनि के व्याकरण के अध्ययन से पता चलता है कि वह अद्भुत है अद्वितीय है। यह जहाँ लौकिक संस्कृत को सूत्रों में बांधता है वहीं वैदिक संस्कृत को भी नियमवद्ध करता है। पाणिनि का व्याकरण पांच भागों में विभक्त है –

1.अष्टाध्यायी
२. धातुपाठ

Volume 4, Issue 1, 2025, p. 62-70, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

3. उणादिकोष

4. लिङ्गानुशासनम्

5.गण पाठ ।

अष्टाध्यायी' जैसा कि इसके नाम से ज्ञात होता है कि इसमें' आठ अध्याय हैं। इसको इस प्रकार कह सकते हैं कि अष्टाध्यायी का विभाजन अध्यायों में है तथा अध्यायों का उपविभाजन पादों में है। इसमें आठ अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्याय में 4 पाद हैं । इस प्रकार कुल 32 पाद हैं। पादों में सूत्रों का विभाजन है ।

प्रथम - अध्याय - प्रथम पाद- 74 , द्वितीय पाद- 73, तृतीयपाद -93 , चतुर्थ पाद- 109 सूत्र ।

द्वितीय-अध्याय - प्रथम पाद **-** 71, द्वितीय पाद- 38, तृतीयपाद - 73, चतुर्थ पाद- 85 सूत्र

तृतीय -अध्याय - प्रथम पाद- 150, द्वितीय पाद- 188, तृतीयपाद - 176, चतुर्थ पाद- 117 सूत्र

चतुर्थ -अध्याय- प्रथम पाद- 176 , द्वितीय पाद- 144 तृतीयपाद - 166, चतुर्थ पाद-144 सूत्र

पंचम-अध्याय- प्रथम पाद- 135, द्वितीय पाद- 140 तृतीयपाद -119, चतुर्थ पाद- 160 सूत्र

षष्ठ-अध्याय- प्रथम पाद- 217, द्वितीय पाद- 199 तृतीयपाद - 138, चतुर्थ पाद- 175, सूत्र

सप्तम-अध्याय- प्रथम पाद- 103, द्वितीय पाद- 118, तृतीयपाद -119, चतुर्थ पाद-97 सूत्र

Volume 4, Issue 1, 2025, p. 62-70, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

अष्टम-अध्याय- प्रथम पाद- 74, द्वितीय पाद- 108, तृतीयपाद -119, चतुर्थ पाद-67 सूत्र

अष्टाध्यायी के प्ररम्भ में 14 प्रत्याहार सूत्र हैं, जिन्हें माहेश्वर सूत्र भी कहते हैं। इस प्रकार अध्यायायी में सूत्रों की संख्या -3979 है। यह संख्या रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित अष्टाध्यायी के अनुसार है[i] ।

अष्टाध्यायी के सूत्रों में स्मृत व्याकरण-आचार्य- 1. आपिशलि 2. काश्यप 3. गार्ग्य 4. गालव 5. चाक्रवर्मण 6. भारद्वाज 7. शाकटायन 8. शाकल्य 9. सेनक 10. स्फोटायन। इन आचार्यों के मतों का विस्तार से वर्णन इस प्रकार है|

1. **आपिशलि-** पाणिनि ने अष्टाध्यायी में आपिशलि आचार्य के मत को स्वीकार किया है तथा बताया है कि अवर्णान्त उपसर्ग से उत्तर सुबन्त अवयव वाली ऋकारादि नामधातु के परे रहते पूर्व और पर के स्थान पर अर्थात ए + ऋ के स्थान पर आपिशलि आचार्य के मत में विकल्प से वृद्धि एकादेश होता है। अर्थात एक पक्ष में वृद्धि एवं एक पक्ष में गुण हो जाएगा ।

वृद्धि पक्ष का उदाहरण- उपार्षभीयति

गुण पक्ष का उदाहरण-उपर्षभीयति [ii]।

2. काश्यप - पाणिनि ने उदात्त परे है जिस अनुदात्त के ऐसे अनुदात्त को स्वरित विधान का निषेध किया है किंतु काश्यप आचार्य के मत का उल्लेख करते हुए कहा है कि इनके मत में स्वरित आदेश हो जाता है | पाणिनि मत का उदाहरण- गार्ग्य क्व, यहाँ य अनुदात्त है काश्यप मत का उदाहरण - गार्ग्य क्व[iii] यहाँ य स्वरित रहेगा ||

Volume 4, Issue 1, 2025, p. 62-70, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

अष्टाध्यायी में काश्यप आचार्य के मत को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि उनके मत में तृष ,मृष एवं कृष धातुओं से उत्तर क्त्वा प्रत्यय विकल्प से कित् नहीं माना जाए अर्थात एक पक्ष में कित् एवं एक पक्ष में अंकित् माना जाए।

काश्यप मत का उदाहरण- तृषित्वा मृषित्वा एवं कृषित्वा।

पाणिनि मत का उदाहरण- तर्षित्वा मर्षित्वा एवं कर्षित्वा[iv]।

एक जगह अन्यत्र भी काश्यप का ग्रहण है किंतु वहां काश्यप का ग्रहण कल्प का प्रवचन करने वाले ऋषि के रूप में है[v]।

3.गार्ग्य - पाणिनि ने रुद् आदि पांच धातुओं से परे अपृक्त सर्वधातुक को अट् के आगम प्रसंग में गार्ग्य आचार्य का नाम उल्लेख किया है , यहां पर गार्ग्य का ग्रहण पूजार्थ है क्योंकि ईट् के बाद अट् का विधान होने से इनका विकल्प सिद्ध ही है। अट् पक्ष में- अरोदत्। अट् अभाव पक्ष में -अरुद: आदि [vi]।

"ओतो गार्ग्यस्य"[vii] सूत्र पर पाणिनि ने गार्ग्य आचार्य के मत में ओकार से उत्तर एकार के लोप का कथन किया है। भो अत्र भागो अत्र इत्यादि । यहां पर भी गार्ग्य का मत सम्मान के लिए किया है।

गार्ग्य के मत में उदात्त परक अनुदात्त को स्वरित हो जाता है गार्ग्य क्व यहाँ य स्वरित है, पाणिनि -गार्ग्य क्व[viii] यहाँ य अनुदात्त है।

4.गालव - पाणिनि ने "इको ह्रस्वोऽयोगालवस्य[ix] " सूत्र पर गालव आचार्य के मत का उल्लेख करते हुए कहा है कि डी अंत में नहीं है जिसके ऐसा जो इक अंत वाला शब्द उसको गालव आचार्य के मत में विकल्प से ह्रस्व होता है। ह्रस्व पक्ष का उदाहरण - ग्रामणिपुत्र:। ह्रस्व अभाव पक्ष का उदाहरण-ग्रामणीपुत्र:।

यहां पर भी गालव ग्रहण पूजा के लिए है विकल्प की अनुवर्ती के लिए अन्यतरस्याम् पूर्व सूत्र से आ ही रहा है।

Volume 4, Issue 1, 2025, p. 62-70, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

अष्टाध्यायी में गालव आचार्य के मत के अनुसार तृतीय विभक्ति से लेकर आगे आने वाली अजादि विभक्तियों के परे रहते भाषित् पुंसक नपुंसक लिंग वाले इगन्त अंग को पुवद्भाव हो जाता है। अन्य आचार्यों के मत में नहीं होता है। गालव आचार्य के मत का उदाहरण - ग्रामण्या ब्राह्मणकुलेन पाणिनि आचार्य के मत का उदाहरण- ग्रामणिना ब्राह्मणकुलेन [x]।

पुंवद्भाव करने का फल है जैसे पुलिंग में ह्रस्व तथा नुम् नहीं होते वैसे ही पुम्वद्भाव कहने से नहीं होते।

गार्ग्य के मत में उदात्त परक अनुदात्त को स्वरित हो जाता है - गार्ग्य क्व यहाँ य स्वरित है ,पाणिनि -गार्ग्य क्व[xi] यहाँ य अनुदात्त है|

गालव के मत में रुद् आदि पांच धातुओं से परे अपृक्त सार्वधातुक को अट् का आगम होता है । गालव के मत में अट् पक्ष का उदाहरण- अस्वपत् | अन्यों के पक्ष में अट् नहीं होगा -अस्वप: बनेगा [xii]।

5.चाक्रवर्मण- अष्टाध्यायी में चाक्रवर्मण के मत में प्लुत "ई३" अच् परे रहते अप्लुतवत् होता है। अर्थात प्लुत कार्य प्रकृतिभाव आदि नहीं होते संधि कार्य हो जाता है । चाक्रवर्मण के मत का उदाहरण- अस्तु हीत्यब्रवीत्| पाणिनि के मत में प्रकृतिभाव होता है -अस्तु ही३ इत्यब्रवीत् [xiii]।

6.भारद्वाज भारद्वाज आचार्य के मत का उल्लेख करते हुए पाणिनि ने कहा है कि तास् पारे रहते जो नित्य अनिट् ऋकारान्त धातु है उसे उत्तर भारद्वाज आचार्य के मत में तास् के ही समान थल् को भी इट् का अगम नहीं होता है। तास्- स्मर्ता, थल्-सस्मर्थ[xiv]।

ऋकारान्त धातु के अजंत् होने से अचस्तास्वत्. से ही थल् को इट् निषेध सिद्ध था पुनः यह सूत्र नियम करेगा की तास् परे रहते नित्य अनिट् ऋकारान्त धातु से उत्तर ही थल को इट् निषेध न हो अन्य सभी अजंत धातुओं

Volume 4, Issue 1, 2025, p. 62-70, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

को थल् पर रहते इट् हो जाए। पेचिथ आदि में भारद्वाज के मत में इट् का आगम हो जाता है।

7.शाकटायन - अष्टाध्यायी में शाकटायन मत को उद्धृत करते हुए पाणिनि का कथन है कि आकारान्त धातुओं से उत्तर लङ् के स्थान पर जुस् होता है। शाकटायन मत का उदाहरण -अयु: अवु:। पाणिनि मत का उदाहरण- अयान् अवान्[xv]।

पाणिनि ने शाकटायन आचार्य के मत का उल्लेख करते हुए कहा है कि भो भगो अघो तथा अवर्ण पूर्ववाले जो पदान्त के वकार यकर हैं उनको लघुप्रयत्नतर आदेश होता है अश् परे रहते व् य् का लघु प्रयत्नतर व् य् ही होता है। शाकटायन आचार्य के मत के उदाहरण-भोयत्र,भगोयत्र अघोयत्र कयास्ते।

पाणिनि आचार्य के मत के उदाहरण- भो अत्र, भगो अत्र, अघो अत्र क आस्ते[xvi]।

अष्टाध्यायी में शाकटायन के मत के अनुसार तीन या अधिक संयुक्त वर्णों को द्वित्व नहीं होता। यहां यह निषेध नित्य होता है । अतः शाकटायन पक्ष में ही उदाहरण बनेंगे - इंद्र: चंद्र: उष्ट्र: राष्ट्रम् भ्रष्ट्राम् [xvii]

8.शाकल्य - सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे[xviii] में पाणिनि ने शाकल्य का मत दिखाते कहा है कि सम्बुद्धि का निमित्त जो ओकारान्त शब्द उसकी प्रगृह्य संज्ञा होती है। शाकल्य आचार्य के मत में प्रगृह्य संज्ञा का फल प्रकृतिभाव के कारण सन्धि का न होना है । शाकल्य आचार्य के मत का उदाहरण- वायो इति। पाणिनि आचार्य के मत का उदाहरण- वायविति [xix]।

इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च[xx] में पाणिनि ने शाकल्य के मत को उद्धृत करते हुए कहा है कि असवर्ण अच् के परे रहते इक् को प्रकृतिभाव हो जाता है। तथा उस इक् के स्थान में ह्रस्व भी हो जाता है, शाकल्य आचार्य है मत में। यहाँ सूत्रारम्भ मात्र से ही विकल्प सिद्ध है पुन: शाकल्य ग्रहण सम्मान प्रकट करने के लिए है। शाकल्य पक्ष में दधि अत्र ,मधु अत्र, म बसे । सूत्र बनाने मात्र से विकल्प पक्ष होगा - दध्यत्र मध्वत्र।

Volume 4, Issue 1, 2025, p. 62-70, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

लोपः शाकल्यस्य[xxi] में पाणिनि ने शाकल्य मत को प्रदर्शित करते हुए कहा है कि अवर्णपूर्व वाले पदान्त यकार वकार का लोप होता है ,शाकल्य आचार्य के मत में। शाकल्य का ग्रहण विकल्प के लिए है। इसलिए जिस् पक्ष में शाकटायन के मत में लघुप्रयत्नतर आदेश नहीं होगा उस पक्ष में व् य् का लोप होगा। अत: तीन रूप बनेंगे- 1 लघुप्रयत्नतर आदेश वाला 2 अलघुप्रयत्नतर आदेश वाला। 3 अलघुप्रयत्नतर लोप वाला । तृतीय वाला लिखा नहीं जा सकता केवल उच्चारण होगा।

शाकल्य पक्ष में -क आस्ते अस्मा उद्धर। शाकटायन पक्ष में - कयास्ते अस्मा उद्धर|

सर्वत्र शाकल्यस्य[xxii] सूत्र में कहा गया है कि शाकल्य आचार्य के मत में सर्वत्र त्रिप्रभृति अथवा अत्रिप्रभृति संयुक्त वर्णों को द्वित्व नहीं होता है। शाकल्य पक्ष का उदाहरण -अर्क: मर्क:। पाणिनि पक्ष का उदाहरण- अर्क्क: मर्क्क:।

9.सेनक- गिरेश्च सेनकस्य[xxiii] के अनुसार सेनक आचार्य के मत में गिरि शब्दान्त अव्ययीभाव समास से समासान्त टच् प्रत्यय विकल्प से होता है । सेनक आचार्य के मत का उदाहरण-अंतर्गिरिम्, उपगरिम्।

पाणिनि आचार्य के मत का उदाहरण- अंतर्गिरि, उपगिरि।

10.स्फोटायन - अवङ् स्फोटायनस्य[xxiv] सूत्र के अनुसार अच् के परे रहते पदान्त में गो को अवङ् आदेश विकल्प से होता है, स्फोटायनआचार्य के मत में ।

स्फोटायन आचार्य के मत का उदाहरण -गवाऽग्रम् । पाणिनि मत का उदाहरण - गोऽग्रम्।

निष्कर्ष - पाणिनि ने दसों आचार्य के मत में बनने वाली रूप संरचना को बताने के लिए यहां पर उनके नाम का उल्लेख किया है और अपने मत को भी अभिव्यक्त किया है। यह उनकी महानता और विनमता का प्रतीक है ।जैसे काश्यप एवं सेनक के प्रसंग में - काश्यप मत का उदाहरण- तृषित्वा मृषित्वा

Volume 4, Issue 1, 2025, p. 62-70, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

एवं कृषित्वा। पाणिनि मत का उदाहरण- तर्षित्वा मर्षित्वा एवं कर्षित्वा| सेनक आचार्य के मत का उदाहरण-अंतर्गिरिम्, उपगरिम् । पाणिनि आचार्य के मत का उदाहरण- अंतर्गिरि , इसी प्रकार अन्य आचार्यों के मतों का उल्लेख किया है|

---

[i] अष्टाध्यायी सूत्रपाठः, पंडित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ,रामलाल कपूर ट्रस्ट |

[ii] वा सुप्यापिशलेः, अष्टाध्यायी 6/1/89

[iii] नोदात्तस्वरितोदयम- गार्ग्यकाश्यपगालवानाम् , अष्टा० 8/4/66

[iv] तृषिमृषिकृषेः काश्यपस्य, अष्टा॰ 1/2/25

[v] काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः, अष्टा॰ 4/3/103

[vi] अड् गार्ग्यगालवयोः अष्टा॰7/3/99

[vii] अष्टा। 8/3/20

[viii] नोदात्तस्वरितोदयम- गार्ग्यकाश्यपगालवानाम् , अष्टा० 8/4/66

[ix] अष्टा० 6/3/60

[x] तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य अष्टा० 7/1/74

[xi] नोदात्तस्वरितोदयम- गार्ग्यकाश्यपगालवानाम् , अष्टा० 8/4/66

[xii] अड् गार्ग्यगालवयोः अष्टा.7/3/99

[xiii] ई३ चाक्रवर्मणस्य अष्टा. 6/1/126

[xiv] ऋतो भारद्वाजस्य अष्टा. 7/3/63

[xv] लङः शाकटायनस्यैव अष्टा 3।4।111

[xvi] व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य अष्टा० 8/3/18

[xvii] त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य अष्टा० 8/4/49

Volume 4, Issue 1, 2025, p. 62-70, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

[xviii] अष्टा॰1/1/16

[xix] अष्टा॰6 /1/123

[xx] अष्टा॰ 6 /1/123

[xxi] अष्टा॰ 6/3/19

[xxii] अष्टा 8 /4 / 50

[xxiii] अष्टा 5/4/112

[xxiv]अष्टा 6/1/119

सन्दर्भ ग्रंथ

अष्टाध्यायी सूत्रपाठ:, पंडित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपूर ट्रस्ट 2019

अष्टाध्यायीभाष्य प्रथमवृत्ति, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपूर ट्रस्ट 2020

काशिका,वामन जयादित्य, संपादक विजयपाल विद्यावारिधि रामलाल कपूर ट्रस्ट 2005

काशिका, वामन जयादित्य, जयशंकर लाल, तारा बुक एजेंसी 1994

लघुसिद्धांत कौमुदी ,वरदराज व्याख्याकार, भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन 2011

सिद्धांत कौमुदी, भट्टोजि दीक्षित, संपादक शिवप्रशाद शर्मा, चौखम्बा विद्याभावन 208

संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास, पंडित युधिष्ठिर मीमांसक, रामलाल कपूर ट्रस्ट 1994

©Indira Gandhi National Open University